दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 60* ❑ *अंक-3* ❑ *दिल्ली* ❑ *नवम्बर 2021 (प्रथम)* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

37वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन

देश विदेश के दलित साहित्यकार और समाजसेवी 11-12 दिसम्बर को सम्मेलन को सुशोभित करेंगे

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का द्विदिवसीय 37वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन 11–12 दिसम्बर, 2021 को पंचशील आश्रम, झड़ौदा (बुराड़ी बाई पास), आउटर रिंग रोड, दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इस महासम्मेलन में देश के अलावा नेपाल, भूटान, यू.ए.ई., इंग्लैंड, अमेरिका, श्रीलंका, मारीशस आदि विदेशों के दलितोत्थान में जुड़े दलित साहित्यकार, पत्रकार, लेखक, समाजसेवी भाग लेंगे और दलितोत्थान विषयों पर विचार विमर्श करेंगे।

पहले दिन का सम्मेलन 'सम्मान दिवस' व दूसरे दिन का सम्मेलन 'अधिकार दिवस' के रूप में आयोजित होगा। इस अवसर पर दलितोत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए दलित साहित्यकारों और समाजसेवियों को डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार तथा डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय फेलोशिप से सम्मानित किया जायेगा।

इस दलित साहित्यकार सम्मेलन में विभिन्न दलों के राजनेता भाग लेकर दलितों की दशा व दिशा पर अपने विचार व्यक्त करेंगे।

सम्मेलन के शुभावसर पर विभिन्न अवार्डों से सम्मानित किये जाने वाले महानुभाव हैं–

डा. अम्बेडकर इन्टरनेशनल अवार्ड-2021

1. सोशल मीडिया–खुशी टी.वी.
(इटली)

2. बेगमपुरा टी.वी.
(दिल्ली)

डा. अम्बेडकर राष्ट्रीय अवार्ड-2021

<u>दलित साहित्य के लिए</u>

1. डॉ. जनक सिंह मीना
असिस्टेंट प्रोफेसर
(राजनीति विज्ञान)
जयनारायन व्यास
विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राजस्थान)

2. श्री रामप्रकाश 'सरोज', आई.पी.एस.
रिटायर्ड ए.डी.जी.पी. (उ.प्र.)
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

3. श्री पी.सी. बैरवा
प्रदेशाध्यक्ष,
भा.द.सा. अकादमी, म.प्र.
अकादमी भवन, उज्जैन
(मध्य प्रदेश)

4. डॉ. सुरेन्द्र कुमार सेलवाल
उकलाना मंडी,
हिसार (हरियाणा)

<u>दलित साहित्य उन्नयन हेतु</u>

1. श्री अरुण महेश्वरी
प्रो. वाणी प्रकाशन,
नई दिल्ली

<u>दलित पत्रकारिता के लिए</u>

1. श्री जयवन्त सिंह एम. जड़ेजा
अम्बेडकर नगर,
अहमदाबाद (गुजरात)

<u>सामाजिक न्याय के लिए</u>

1. श्री रमेश चन्द्र 'रत्न',
एडवोकेट (सुप्रीम कोर्ट)
चेयरमैन–पी.एस.सी. कमेटी,
रेलवे बोर्ड (भारत सरकार)

2. श्रीमती विभा 'राही' उज्ज्वल
समाजसेविका
मुम्बई (महाराष्ट्र)

<u>दलितोत्थान कार्यों के लिए</u>

1. श्री राजेन्द्र पाल गौतम
समाज कल्याण मंत्री,
दिल्ली सरकार

2. श्री अमरीश सिंह गौतम
पूर्व डिप्टी–स्पीकर,
दिल्ली सरकार

डा. अम्बेडकर विशिष्ठ सेवा नेशनल अवार्ड-2021

1. श्रीमती सन्ध्या रानी मेन्डीली
चडाई पकं वाया उलून्डा
जिला–सुबरनपुर (उड़ीसा)

2. डा. तनुजा
ललित भवन, बेली रोड,
पटना (बिहार)

3. श्री बाबू वी जी
वेलाचलील हाऊस, ईरूमामुंडा
मल्लपुरम (केरल)

4. श्री सथीसन के.वी.एम
मेलेडाथमाना, चेम्ब्रास्सेरी,
मल्लपुरम (केरल)

5. श्री सन्तोष कुमार डी.
एस.के. वेड्यार,
कोलूथाप्पील्ली, अडाट,
डा.–वडलवकाव, थ्रिसूर
(केरल)

6. श्री बीजू मथे वेडयार
वेट्टीक्कूझहा, कवला,
कट्टाप्पना, इडुक्की (केरल)

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

जिसकी जितनी संख्या भारी...

सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी की केन्द्रीय सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में कहा है कि पिछड़े वर्गों की जाति आधारित जनगणना प्रशासनिक रूप से कठिन और दुष्कर है और जनगणना के दायरे से इस तरह की सूचना को अलग करना सतर्क नीति निर्णय है। इसका सीधा सा अर्थ है कि वर्तमान भाजपा की सरकार जातिगत जनगणना नहीं कराना चाहती और वह इससे दूर भाग रही है।

इस पर राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के अध्यक्ष लालू यादव ने भारतीय जनता पार्टी एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर.एस.एस.) पर अन्य पिछड़ा वर्ग (ओ.बी.सी.) से नफरत करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि जनगणना में जब सांप–बिच्छू, तोता मैना, हाथी घोड़ा, कुत्ता बिल्ली, सुअर सियार, पेड़ पौधे गिने जायेंगे, लेकिन पिछड़े–अति पिछड़े वर्गों के इंसानों की गिनती नहीं होगी। उन्होंने तंज कसा कि जब 60 फीसदी लोगों की जनगणना नहीं होगी, तो ऐसी सरकार को जनता पर शासन करने का अधिकार नहीं है।

इससे पूर्व बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार भी अपने सभी विरोधी दलों के प्रतिनिधियों के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिलकर जातिगत जनगणना कराने की मांग कर चुके हैं, पर लगता नहीं है कि जातिगत जनगणना वर्तमान सरकार कराये। आखिर क्यों नहीं?

जातिगत जनगणना का इतिहास बहुत पुराना है। स्वयं मनुस्मृति की वर्ण आधारित व्यवस्था ने समाज के लोगों को चार वर्णों में बांट दिया, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों को उच्च वर्ण में और शूद्र वर्ण को निम्न वर्ण में विभाजित कर दिया। सत्ता, सम्पदा, शिक्षा व रोजगार आदि को भी इस आधार पर बांट कर उच्च वर्ण अपने अधिकार के रूप में इन पर काबिज हो गया। शूद्र वर्ण को इन अधिकारों से प्रतिबन्ध लगाकर वंचित कर दिया, उसे उपरोक्त तीनों वर्णों की सेवा (गुलामी) से बांध दिया। इससे सामाजिक व आर्थिक विषमता बढ़ गई। इस तरह 15 फीसदी के सवर्ण लोग 85 फीसदी शूद्र वर्ण पर हावी हो गये। मनुस्मृति धर्मशास्त्र के नाम पर हजारों साल तक यह व्यवस्था चलती रही। कितने ही शासक–राजा–महाराजा आये और चले गये, पर किसी ने भी इस व्यवस्था के खिलाफ आवाज नहीं उठाई। अगर किसी ने साहस और हिम्मत करके इस वर्ण व्यवस्था का विरोध किया तो उसे धर्मशास्त्र के विरोध के नाम पर कुचल दिया गया।

जब देश में अंग्रेजों का शासन आया तो उन्होंने ब्राह्मणवादी क्रूर सामाजिक व्यवस्थाओं को बदलने की ओर कदम बढ़ाया। उन्होंने कई सामाजिक सुधार किये, उच्च वर्णों के एकाधिकार को खत्म करना शुरू किया और समाज के वंचित शूद्र (अछूत–दलित) वर्ण को समानता देना शुरू किया। अंग्रेजी हकूमत ने देश में पहली जातिगत जनगणना 1931 में कराई। इससे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्यों और शूद्र वर्ण यानी अछूत–दलितों की जातियों के सही आंकड़े सामने आये। अंग्रेजी शासन ने ही अछूतों (शूद्रों) को हिन्दुओं का अंग नहीं मानते हुए उन्हें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़ी जाति

(शेष पृष्ठ 4 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/-
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/-
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/-
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/-
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/-
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/-
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/-
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/-
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/-
दलित साहित्य की हुंकार-सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/-
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/-
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/-
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/-
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/-
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/-
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/-
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/-
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/-
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/-
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/-
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/-
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/-
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/-
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/-
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी-3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-9

फोन : 27421449, मो. 9810278936, 9891989175

गरीबी और सवाल

रवि शंकर

गरीबी एक वैश्विक समस्या है। दुनिया के ज्यादातर देश खासतौर से अफ्रीकी, एशियाई और लातिन अमेरिकी देश इससे जूझ रहे हैं। गरीबी का मतलब है गरीबी रेखा से नीचे जीवन जीना। किसी भी स्वतंत्र देश के लिए गरीबी एक बहुत शर्मनाक स्थिति है। ऐस में भारत ने अपने लोगों को गरीबी के दलदल से निकालने की दिशा में लंबी छलांग लगाई है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) की ओर से जारी रिपोर्ट के अनुसार भारत में वर्ष 2006 से 2016 के बीच सत्ताईस करोड़ से ज्यादा लोगों को गरीबी से बाहर निकाला गया। रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2005-06 में भारत के करीब चौसठ करोड़ यानी पचपन फीसद लोग गरीबी में जी रहे थे। साल 2015-16 में यह संख्या घटकर सैंतीस करोड़ पर आ गई। इस प्रकार भारत ने बहुआयामी यानी विभिन्न स्तरों और दस मानकों में पिछड़े लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में उल्लेखनीय प्रगति की है।

यूएनडीपी की इस रिपोर्ट में इस बात का खुलासा किया गया है कि गरीबी कम करने की दिशा में पहल करने वाले देशों में दुनियाभर में भारत समेत दक्षिण एशियाई देश सबसे आगे हैं। यह एक आशाजनक संकेत है कि गरीबी के खिलाफ वैश्विक लड़ाई जीती जा सकती है। यूएनडीपी ने गरीबी और मानव विकास पहल का जो सूचकांक तैयार किया है, उसमें गौर करने वाली बात यह है कि गरीबी के दायरे से बाहर होने वालों में मुसलिम, दलित और अनुसूचित जाति वर्ग के लोगों की संख्या काफी ज्यादा रही। पिछले एक दशक में भारत में समाज के सबसे गरीब तबके की स्थिति में सुधार आया है। खास बात यह है कि भारत में भी गरीबों के उत्थान में सबसे तेज रफ्तार झारखंड की रही है।

हाल में एक अमेरिकी शोध संस्था ब्रकिंग्स की ओर से भारत में गरीबी को लेकर जारी आंकड़े सरकार को सुकून देने वाले थे। रिपोर्ट में दावा किया गया था कि पिछले कुछ साल में भारत में गरीबों की संख्या बेहद तेजी से घटी है। सबसे अच्छी बात यह है कि भारत के ऊपर से सबसे ज्यादा गरीब देश होने का ठप्पा भी खत्म हो गया है। देश में हर मिनट चवालीस लोग गरीबी रेखा के ऊपर आ रहे हैं। यह दुनिया में गरीबी घटने की सबसे तेज दर है। रिपोर्ट के अनुसार देश में 2022 तक तीन फीसद से कम लोग ही गरीबी रेखा के नीचे होंगे। वहीं 2030 तक बेहद गरीबी में जीने वाले लोगों की संख्या देश में नहीं के बराबर रहेगी।

लेकिन विश्व बैंक इससे अलग सोचता है। उसका मानना है कि अभी भारत में दुनिया की एक तिहाई गरीबी आबादी रहती है। इसमें से 32.7 फीसद आबादी ऐसी है जो सवा डॉलर (सौ रुपए से भी कम) से कम में गुजारा कर रही है। जबकि 68.7 फीसद आबादी ऐसी है, जिसे दो डॉलर (डेढ़ सौ रुपए लगभग) रोजाना से कम में गुजारा करना पड़ रहा है। लेकिन वर्तमान में भारत में गरीबी के मापदंड ही सवालों के घेरे में हैं। हमारे यहां गरीबी की एक नहीं, कई परिभाषाएं हैं। तेंदुलकर समिति के मानक के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में सत्ताईस रुपए और शहरी क्षेत्रों में तैंतीस रुपए प्रतिदिन खच्र करने वालों की गरीबी रेखा से ऊपर रखा गया और इस मानक के अनुसार गरीबी रेखा वाली आबादी में बाईस फीसद की गिरावट दर्ज की गई। यह आकलन काफी विवादास्पद रहा था। बाद में रंगराजन समिति ने इस सीमा को बढ़ा दिया, जिसमें ग्रामीण इलाकों में बत्तीस रुपए और शहरी इलाकों में सैंतालीस रुपए प्रतिदिन खर्च करने वालों को गरीबी रेखा से बाहर रखा गया और गरीबी में तीस फीसद गिरावट की बात कही गई। नीति आयोग के ताजा अनुमान के मुताबिक शहरों में पैंसठ रुपए और ग्रामीण इलाकों में बाईस रुपए बयालीस पैसे से ज्यादा रोजना खच्र करने वाले लोग गरीब नहीं हैं। ऐसे में सवाल है कि क्या ये आंकड़े गरीबी की परिभाषा तय करने के लिए पर्याप्त है?

आजादी के सात दशक बाद भी भारत में गरीब और गरीबी पर विकासशील व पिछड़े देशों के लिए भी अभिशाप बनी हुई है। इसीलिए अभी भी अपेक्षाकृत गरीबों की बेहतरी के लिए काफी कुछ किए जाने की जरूरत है।

देश में गरीबी की दर घटने को लेकर लोगों की यह धारणा कुछ हद तक सही हो सकती है कि केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का इसमें योगदान है। लेकिन इन योजनाओं से कितनी और किस तरह गरीबी दर में कमी आ रही है, यह दावा विवादों को ही जन्म दे रहा है। ऐसी योजनाओं के क्रियान्वयन और इनमें भ्रष्टाचार को सवाल उठते रहे हैं। एक तरफ तो विश्व की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था होने की आत्ममुग्धता तो दूसरी तरफ विश्व के एक तिहाई गरीबों को अपने दामन में समेटे रहने का कलंक।

भारत की यह विरोधाभासी छवि वाकई सोचने को बाध्य कर देती है। बुलेट ट्रेन का सपना संजोते देश ने दूसरे देशों के उपग्रह अंतरिक्ष में छोड़ने की क्षमता तो अर्जित कर ली, पर वह गरीबी के अभिशाप से

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का अद्वितीय ग्रन्थ

Book of Record–Who's Who International and National Awardees of Bharatiya Dalit Sahitya Akademi

300 पृष्ठों का यह अकादमी का ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनूठा ग्रन्थ है जिसमें अकादमी के गत 36 सालों में अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय नेशनल अवार्डियों का वर्षवार विवरण दिया गया है। इस ग्रन्थ का कान्टेंट (सन्दर्भ) भी A to Z–क्रमानुसार दिया गया है जहां कोई भी नेशनल या इन्टरनेशनल अवार्डी अपना नाम देखकर तुरन्त क्रमवार जान सकता है कि उसे सम्मेलन में किस वर्ष में कब, किस अवार्ड से सम्मानित किया गया था। अकादमी का वह सम्मेलन कब, कहां आयोजित हुआ और उस सम्मेलन में किस मुख्य अतिथि द्वारा उसे 'अवार्ड' देकर सम्मानित किया गया।

इस ऐतिहासिक ग्रन्थ में प्रत्येक अवार्डी का उसे अलग–अलग अवार्डों से सम्मानित होने का भी वर्षवार विवरण है साथ ही उन्हें एक, दो, तीन, चार 'स्टार' प्रदान कर उनके सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यों के योगदान को दर्शाया गया है।

इस ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनोखे ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर उन सभी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री व समाजसेवियों के चित्र दिये गये हैं जिन्होंने गत 36 वर्षों में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन की शोभा बढ़ाने के साथ–साथ सम्मेलन में प्रतिभागी प्रतिनिधियों को अपने उद्‌बोधन से राष्ट्र सेवा में अग्रसर रहने के लिए प्रेरित किया और उन्हें 'अवार्ड' से सम्मानित कर उनके रचनात्मक कार्यों व योगदान की सराहना की।

अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित इस अद्वितीय ग्रन्थ में ढाई हजार के लगभग महानुभावों का विवरण दर्ज है जिनमें अवार्डियों के अलावा सम्मेलन के मुख्य अतिथि और अकादमी के संरक्षक, मार्गदर्शक और सहयोगी शामिल हैं।

दलित साहित्य पर शोधकर्त्ताओं, साहित्यकारों, समाजसेवियों के लिए यह ग्रन्थ अमूल्य है, पठनीय है और सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में संग्रहणीय है। बाबा साहब डा. अम्बेडकर को समर्पित इस अनमोल ग्रन्थ का मूल्य 500 रुपये है जिसे आर्डर देकर अकादमी कार्यालय से मंगाया जा सकता है।

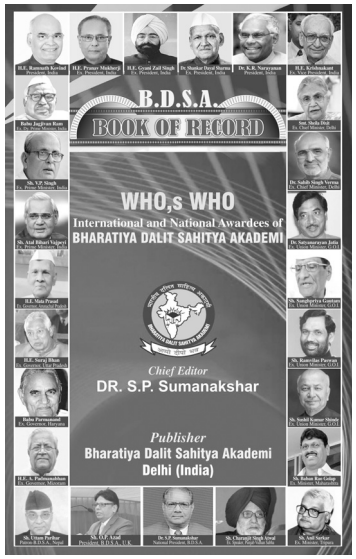

इस ग्रन्थ के सम्पादक, संरक्षक, प्रकाशक अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर हैं जिनके कई वर्षों के परिश्रम के बाद इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो सका। ग्रन्थ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–

भारतीय दलित साहित्य अकादमी
बी–3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन–I, दिल्ली-110009
मोबाइल :
9891989175, 9810278936
कार्यालय फोन :
011-27421449

लगातार अध्ययन और खुलासे हो रहे हैं। भारत को आज भी विकासशील देश की श्रेणी में रखा जाता है। अभी भी यहां गरीबी रेखा से नीचे बड़ी आबादी रहती है। भले हम संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की रिपोर्ट से खुश हो सकते हैं कि भारत को गरीबी कम करने की दिशा में बड़ी कामयाबी मिली है लेकिन हम इस सच्चाई से भी इनकार नहीं कर सकते कि अब भी दुनिया के सबसे ज्यादा गरीब भारत में रहते हैं। अब भी छत्तीस करोड़ से ज्यादा लोग किसी न किसी रूप में गरीबी झेल रहे हैं।

भारत में 1990 से 2017 के बीच सकल राष्ट्रीय प्रति व्यक्ति आय में 266.6 फीसद का इजाफा हुआ है। क्रय क्षमता के आधार पर भारत की प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय करीब 4.55 लाख रुपए पहुंच गई है जो पिछले साल से 23,470 रुपए अधिक है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के चार राज्यों– बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में गरीबों की संख्या सर्वाधिक है। गौर करने वाली बात यह है कि इन चारों राज्यों में पूरे भारत के आधे से ज्यादा गरीब रहते हैं जो करीब बीस करोड़ की आबादी है। स्पष्ट है गरीबी न केवल भारत, बल्कि दुनिया के अन्य मुक्त नहीं हो सका। देश में गरीबी मिटाने का जितना धन खर्च हुआ है वह कम नहीं है। केंद्र सरकार के हर बजट का बड़ा भाग आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए आवंटित रहता है, किंतु इसके अपेक्षित परिणाम देखने को नहीं मिलते। ऐसा लगता है कि या तो प्रयासों में कहीं कमी है या फिर प्रतिबद्धता नहीं है, या लक्ष्यों की दिशा ही गलत है।

गरीबी वाकई बड़ा अभिशाप है जिसे हम सदियों से झेलते आ रहे हैं। यह कैसे और कब तक दूर होगा, यह एक विचारणीय मुद्‌दा है। भले ही सरकारी और गैर सरकारी प्रयास हर स्तर पर किए जाते हैं ताकि कोई भी गरीब न रहे। लेकिन काम कठिन है। यदि आबादी के बोझ से हमसे भी ज्यादा दबा चीन गरीबी से उबर सकता है तो हम क्यों नहीं? इसे दुर्भाग्य ही कहें कि भारत में हर साल गरीबी उन्मूलन और खाद्य सहायता कार्यक्रमों पर अरबों रुपए खर्च किए जा रहे हैं। फिर भी भारत की सवा सौ करोड़ की विशाल आबादी में एक चौथाई से भी ज्यादा लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं। बेशक आज देश में अनाज की कोई कमी नहीं है, फिर भी गरीबी, भुखमरी से लोग मर रहे हैं। आखिर इसका जिम्मेदार कौन है? •

दलित गौरव – वीरांगना झलकारी बाई

अनसूया 'अनु'

वीरांगना झलकारी बाई का जन्म 1830-35 के बीच झांसी के उत्तर–पश्चिम में भोजला ग्राम में हुआ था। झलकारी के पिता का नाम मूलचन्द्र तथा माता का नाम धनिया था। मूलचन्द्र जी फौज में ऊंचे ओहदे पर लगे हुए थे। वह एक बहादुर सैनिक तथा जाने– माने तीरंदाज थे। वह कोरी परिवार के थे। उनके घर का वातावरण स्वतंत्र, स्वच्छ, स्वच्छंद, त्याग और देशभक्ति भावना से परिपूर्ण था। धनिया अपने सैनिक पति की तरह बहादुर, स्पष्ट और सुलझे विचारों की महिला थी। साधारण वेशभूषा, सामान्य खान–पान परंतु उच्च विचारों की छाया में झलकारी ने खड़ा होना सीखा। उसका परिवार अंधविश्वासों से कोसों दूर तथा आधुनिकता के बहुत निकट था। यूं तो धर्म–कर्म में पूर्ण विश्वास था झलकारी के परिवार का लेकिन बनावट, ढोंग, झूठे घमंड और दिखावे की भावना उन्हें छू भी नहीं पाई थी। पति–पत्नी एक दूसरे से पूर्ण सहयोगी और दुःख– सुख के साथी थे।

एक दिन झलकारी अपनी माता मिटना ही मानव जन्म की सफलता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्राण भी गंवाने पड़े तो जीवन धन्य हो जाता है। उसने महिलाओं की इस बात से अवगत कराया कि महाराज गंगाधर की मृत्यु के बाद रानी बहुत अकेली पड़ गई है। नृशंस अंग्रेज झांसी को हड़पना चाहते हैं इसलिए वे रानी के दत्तक पुत्र को वारिस की मान्यता प्रदान नहीं कर रहे। झांसी पर संकट के बादल गहरा रहे हैं। किसी भी समय बिजली टूटकर त्राहि–त्राहि मचा सकती है। न जाने कब बादल फट जाएं और झांसी कष्टों में डूब जाए।

स्त्री सेना, जिसका नाम 'दुर्गा दल' रखा गया, उसी उद्देश्य से गठित किया गया था कि वह रानी की आन– बान और शान तथा झांसी की सुरक्षा का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले। सभी स्त्रियां रानी की विश्वासपात्र बनकर राज्य की सुरक्षा में अपना सहयोग देने के लिए तत्पर रहें और इस प्रकार लक्ष्मी बाई की ताकत और हौंसले को बुलंद रखें।

उन दिनों डाकू सागर सिंह का आतंक उस इलाके में चारों ओर फैला हुआ था। डाकू सागर सिंह की ओर चल पड़ा। इस प्रकार झलकारी ने अपनी ओजस्वी वाणी से डाकू सागर सिंह का हृदय–परिवर्तन कर झांसी की शक्ति को कई गुना बढ़ा दिया। अब झलकारी रानी लक्ष्मी बाई की चहेती बन गई थी।

लक्ष्मी बाई झलकारी को अपने आसपास ही रखना चाहती थी। समय बहुत खराब चल रहा था। कब अंग्रेजों के प्यादे वहां आ धमकें, कोई भरोसा नहीं था। अचानक खबर फैली कि अंग्रेज झांसी की ओर बढ़ रहे हैं। किले में खलबली मच गई।

झांसी अंग्रेजों द्वारा घेर ली गई। अंग्रेज बहुत पहले से ही इन सुअवसर की तलाश में थे। उन्हें कुछ उड़ती–उड़ती खबर मिल गई थी कि रानी के कुछ विश्वासपात्र अपनी ढपली अलग बजाना चाह रहे हैं। वीर अली और दूल्हा जू रानी से खिलाफत करने लगे थे। रानी द्वारा स्त्री सेना की यदाकदा प्रशंसा कर देना उन्हें सहय नहीं था। उन्हें ऐसा अनुभव होने लगा में गौरा पश्चिम में सभी जाति और धर्म के जवान अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित थे।

होनी को कुछ और ही मंजूर था। दूल्हा जू की अंग्रेजों से सांठ–गांठ तो पहले ही हो चुकी थी। उसकी नीयत में खोट आ गया था। अंग्रेजों के धावा बोलते ही ओरछा गेट पर अंग्रेजी सेना को प्रवेश मिल गया। बड़ी नाटकीयता से पीर अली और दूल्हा जू खाली फायर कर रहे थे और दुश्मन किले में सुगमता से रास्ता बनाकर प्रवेश कर रहा था। इन दोनों देशद्रोहियों ने देशभक्तों को धूल चटा दी। भांडेरी गेट पर पूरा कोरी समाज अपनी जान हंस–हंस कर लुटा रहा था और दतिया गेट पर राठौर वंश अपनी जान पर खेल रहा था। पीर अली और दूल्हा जू सबकी कुर्बानी पर पानी फेरने पर उतारू थे। दुर्गा दल ने अपनी बहादुरी से दुश्मनों के सर काट–काट पर बिछा दिए। उन्होंने अस्त्र–शस्त्रों से लैस अंग्रेजी सत्ता के छक्के छुड़ा दिए। स्त्री सेना की वीरता देखकर अंग्रेज त्राहि–त्राहि करने साथ किले से बाहर सुरक्षित जगह पर जाने के लिए मना लिया और खुद रानी लक्ष्मीबाई का लिबास धारण कर मैदान में अपने दुर्गा दल के साथ कूद पड़ी और अपनी सारी ताकत अंग्रेजों को किले से बाहर रोकने में लगा दी।

झलकारी बाई ने अपने साहस और शौर्य से हजारों अंग्रेजों सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया, पर अंग्रेजों की फौज के सामने वह कब तक टिकी रहती। आखिर में अंग्रेजों की तोप का एक गोला उसके ऊपर गिरा और वह वीरता के साथ लड़ते–लड़ते ढेर हो गई। अंग्रेज खुश थे कि उन्होंने महारानी लक्ष्मीबाई को मार गिराया, पर जब उन्हें पता लगा कि यह महारानी लक्ष्मीबाई नहीं, बल्कि उसकी हमशक्ल झलकारी बाई है। महारानी तो झांसी छोड़कर अपने दत्तक पुत्र के साथ ग्वालियर जा चुकी थी। झलकारी बाई की वीरता और साहस को देखकर अंग्रेज सेनापति ह्योरोज ने कहा कि अगर भारत में झलकारी बाई जैसी और कई महिला हो जायें तो उन्हें भारत छोड़ना पड़ेगा। धन्य है झलकारी बाई जिसने झांसी

धनिया के साथ मंदिर में जल चढ़ाने गई। पूजन आदि के बाद झलकारी और धनिया मंदिर से बाहर आ रही थी। वहां उन्हें पूरन नाम का युवक मिला। पूरन आकर्षक व्यक्तित्व का एक बांका जवान था। वह झांसी की रानी की फौज में था। बड़ा अच्छा गोलंदाज था। झलकारी को वह बहुत भला लगा। माता धनिया को भी वह पसंद आ गया। मूलचन्द्र और धनिया ने झलकारी का विवाह पूरन से तय कर दिया। पूरन को भी झलकारी बहुत अच्छी लगी और वह विवाह के लिए सहर्ष तैयार हो गया।

रानी लक्ष्मी बाई ने झांसी की सुरक्षा हेतु झलकारी को स्त्री सेना बनाने के लिए आमंत्रित किया। देखते ही देखते आनन–फानन झलकारी ने महिलाओं को एकत्रित किया। अगले ही दिन से महिलाओं को अखाड़े का अभ्यास, मलखम्भ, अस्त्र–शस्त्र का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। झलकारी उनके तन को फौलाद का बना देना चाहती थी। वह उनके हृदय में देश की खातिर मर मिटने की तीव्र लालसा जगाती। इस प्रकार वह उनका अबलापन दूर कर देना चाहती थी। वह महिलाओं को समझाती कि केवल अच्छा भोजन, कीमती वस्त्र अथवा सुख–वैभव को भोगना ही जीवन नहीं अपितु किसी उद्देश्य के लिए जीना तथा देश के लिए मर बहुत ही निर्भीक और बहादुर था। ऐसे कठिन समय में झांसी को उस जैसे बहादुरों की अत्यंत आवश्यकता थी। इसलिए झलकारी ने मन–ही–मन उसका हृदय परिवर्तन करने का दृढ़ निश्चय किया और उसकी खोज में चल दी। नदी–नाले ओर जंगल पार कर वह आखिर सागर सिंह की खोह तक पहुंच ही गई। खोह के मुहाने पर जाकर उसने डाकू सागर सिंह को ललकारा। दोनों तरफ से खूब गोलियां चलीं जिसमें डाकू सागर सिंह घायल हो गया।

झलकारी ने सागर सिंह से लड़ाई शांत करने के लिए कहा और अपना निश्चय सुनाते हुए वह सागर सिंह से बोली कि तुम एक शक्तिशाली योद्धा हो। अपनी शक्ति को इन व्यर्थ की बातों में नष्ट न करो। यह जिल्लत का जीवन तुम जैसे कर्मयोगियों के लिए नहीं है। झांसी पर अंग्रेजों के आक्रमण के बादल घिरे हुए हैं। तुम्हारी धरती को तुम्हारी जैसे शूरवीरों की बहुत आवश्यकता है। आओ, हमारे साथ चलो। हम तुम्हें लेने आए हैं। तुम अपनी शक्ति का प्रयोग सही स्थान पर करो और सच्चे कर्मवीर बन अपनी झांसी को सुरक्षा प्रदान करो।

सोच–विचार के लिए सागर सिंह को पर्याप्त समय दिया गया। कुछ देर के बाद सागर सिंह अपने गिरोह को लेकर झलकारी के साथ झांसी था कि रानी उनके कार्यों की उपेक्षा कर दुर्गा दल को ज्यादा तरजीह देने लगी है। रानी के विशेष विश्वासपात्र होने के कारण उनका विरोध बहुत भयानक दृश्य उपस्थित कर सकता था, इसी बात का अनुचित लाभ उठाना चाहते थे। अंग्रेजों को प्रपंच में फंसा कर किले के द्वार खुलवाने की योजना बना ली।

आक्रमण की खबर उड़ते–उड़ते रानी तक पहुंची। रानी सावधान हो गई। प्रमुख सभासदों को बुलाकर उसने मंत्रणा की और सभी लोग उचित स्थान पर तैनात कर दिए गए। रानी स्वयं सैन्य दल के भोजन, पानी, अस्त्र–शस्त्र की व्यवस्था में जुट गई। विश्वासघात किए जाने की बात उसे उज्ज्वल मन–मस्तिष्क में दूर–दूर तक नहीं थी।

दीवान दूल्हा जू को भीतर कुछ कचोट रहा था। वह रानी को किसी भी सुअवसर पर छलने की ठाने बैठा था। ऐसे ही लालची लोगों ने सोने की चिड़िया भारत के पर काट कर उसे अंग्रेजी सत्ता की गुलामी के पिंजरे में कैद कर दिया था। रानी ने निस्संकोच ही दूल्हा जू और पीर अली को ओरछा गोट पर तैनात किया। पूरन उन्नाव गेट पर चौकसी कर रहा था। खाण्डेराव गेट पर सागर सिंह पूरी मुस्तैदी से अपना कर्तव्य निभा रहा था। दक्षिण लगे। नारी दल इतना खूंखार हो सकता है। अंग्रेजों ने सपने में भी न सोचा था। ह्यूरोज की हिम्मत टूटने लगी।

झलकारी बाई ने समय की नजाकत को समझते हुए रानी लक्ष्मीबाई को उसके दत्तक पुत्र के को बचाने के लिए खुद को बलिदान कर दिया और महारानी लक्ष्मीबाई को भी सुरक्षित झांसी से बाहर भेजन में कामयाब रही। वीरांगना झलकारी बाई का यह बलिदान इतिहास के पन्नों में उसे सदैव जीवित रखेगा। •

लघुकथा

कडुवा सच

''आप दीपक को जानते हैं?'' मेरे आफिस के एक साथी ने चाय पीते हुए मुझसे पूछा था।

''हां।''

''वह भी लेखक है। तुम्हारी तरह ही, दलित साहित्य जैसा कुछ लिखता है।'' वह आगे बोला था।

''दलित साहित्य जैसा नहीं। दलित साहित्य ही लिखते हैं दीपक जी।'' मैंने आगे स्पष्ट किया था।

''क्या यार! वह तो भट्टे पर काम करने वालों पर कहानी लिख देता है, झाड़ू–पोंछा लगाने वाली औरतों पर लिख देता है। मजदूरों को तो उसकी कहानियों में विशेष रूप से देखा जा सकता है और तो और जातियों में भी सबसे नीची जाति वाले लोगों की जीवन गाथाएं लिखना तो उसे खूब आता है। क्या क्या यह भी कोई साहित्य होता है।'' हालांकि मेरा वह साथी भी, तथाकथित नीची जाति वाला ही है।

''तो साहित्य क्या होता है?'' मुझे थोड़ा–थोड़ा गुस्सा आने लगा था।

''जैसा प्रसाद, पंत, निराला ने लिखा, महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमार चौहान और..... ने लिखा।'' वह सीना चौड़ा करके बताए जा रहा था। उसे देखकर लग रहा था कि वह साहित्य का महायोद्धा हो। तभी मैंने उससे कहा था, ''इन सभी के साहित्य में तुम कहीं नहीं हो। तुम्हारी पीड़ा और दर्द को ये साहित्यकार कभी नहीं पहचान पाए। इनके लिए कुछ भी सुन्दर और आदरणीय रहा लेकिन तुम कभी नहीं रहे और आप जिस दीपक की बात कर रहे हैं, उसके साहित्य में जो यथार्थ है वह कडुवा सच है। उसे समझने की कोशिश करो और उसमें अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य को निहारो फिर बताओ कि वह तथाकथित नीची जाति वालों की जीवन गाथाएं लिखते हैं या सवर्णों को महिमामंडित..... ।'' मैं भावुक होने लगा था।

''शायद, तुम स.....च।'' और चाय का कप रखते हुए वह कुछ सोचने लगा था।

– डा. पूरन सिंह

हिमायती
4 / नवम्बर (प्रथम), 2021 (कुल पृष्ठ 4)
पोस्टल डिस्पेच तिथि : 1-2 नवम्बर 2021

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020
प्रकाशन तिथि : 29 अक्तूबर, 2021

सम्पादकीय का शेष ..... जिसकी जितनी संख्या भारी...

(ओ.बी.सी.) का नाम देते हुए उनकी जातिगत जनगणना का खुलासा किया। इसके अनुसार देश में अनुसूचित जाति 15 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति 7.5 प्रतिशत पिछड़ी जातियां 52 प्रतिशत तथा अल्पसंख्य जातियां 10.50 प्रतिशत यानि निम्न जातियां 85 फीसदी और बाकी बची सवर्ण जातियां 15 फीसदी। अंग्रेजी हुकूमत ने इसी जातिगत जनगणना को आधार मानकर अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए 'कम्युनल अवार्ड' की घोषणा की थी जिससे की इन सुविधाओं को पाकर वे भी समाज के अन्य वर्गों की बराबरी कर सकें। दलितों को दी गई सुविधाओं में उन्हें 'दो वोटों' का अधिकार और उनकी जातिगत जनसंख्या के अनुपात में शासकीय चुनावों की सीटों में आरक्षण निर्धारित किया गया था, उसी आधार पर सरकारी नौकरियों व शिक्षा संस्थानों के पदों में भी उनका आरक्षण आरक्षित किया गया था। ये सब अधिकार बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के लन्दन की राउन्ड टेबुल कान्फ्रेंस में दिये गये भारत के अछूतों को समानता के अधिकारों की मांग-पत्र की पूर्ति की एवज मं दिये गये थे। अंग्रेजी हुकूमत द्वारा दलित अछूतों को देश की सत्ता, सम्पदा, शिक्षा, रोजगार में भागीदारी के लिए दिये विशेष अधिकारों से महात्मा गांधी सहमत नहीं थे। इससे उन्हें हिन्दू धर्म व हिन्दू समाज टूटता नजर आने लगा, इसीलिए उन्होंने इस अधिकारों के विरोध में पुणे की यरवदा जेल में आमरण अनशन शुरू कर दिया। इससे उनके प्राण बचाने के लिए हिन्दू नेताओं ने बाबा साहब डा. अम्बेडकर पर दबाव बनाना शुरू किया कि वे अंग्रेजी हुकूमत द्वारा अछूत-दलितों को दिये गये विशेष अधिकारों को लौटा दें और हिन्दू समाज उनके उत्थान के लिए अलग से विशेष अधिकार देने को तैयार है। बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने गांधी जी की जान बचाने के लिए अंग्रेजी हुकूमत द्वारा दिये इन अधिकारों को लौटाने की घोषणा की और गांधी जी के साथ अछूतों के उत्थान से सम्बन्धित निर्वाचन में वोट देने, उनके अलग से चुनाव क्षेत्र बनाने, उनके लिए निर्वाचन, सरकारी नौकरियों और शिक्षा संस्थानों में उनकी जाति जनसंख्या के आधार पर आरक्षण देने के लिए एक समझौता किया, जिसे 'पूना पैक्ट' के नाम से सभी जानते हैं। देश आजाद होने के बाद भारतीय संविधान में बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने 'पूना पैक्ट' में किये समझौते के सभी अधिकारों को अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के लिए उनकी संख्या बल के आधार पर आरक्षण देना निश्चित किया गया। पर दुखद बात यह है कि इन आरक्षित सरकारी नौकरियों के पदों को आजादी के 75 सालों में अब तक पूरी तरह नहीं भरा गया। राजनीति पार्टियों ने देश की सत्ता के चुनावों में इस आरक्षण को बराबर रखा, पर अन्य सहूलियतों के विषय में उन्होंने आंखें मूंद रखी हैं।

जहां तक अन्य पिछड़ा वर्ग की जातियों की बात है उनकी कुल अनुमानित आबादी 52 फीसदी होते हुए भी सरकारी नौकरियों और शिक्षा संस्थानों में सिर्फ 27 फीसदी आरक्षण मिला हुआ है जो घोर अन्याय है। इस विषय में सुप्रीम कोर्ट ने व्यवस्था दी हुई है कि सभी को मिले आरक्षण की सीमा को 50 फीसदी से आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। इसका सीधा सा अर्थ साफ है कि 85 फीसदी आरक्षित वर्ग को 50 फीसदी के दायरे में रहना होगा और बाकी 15 फीसदी अनारक्षित वर्ग शेष 50 फीसदी का उपभोग करता रहेगा। और अब तक कुछ जातियों के लिए 'आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग' का नाम देकर इस अनारक्षित 50 फीसदी में से 10 फीसदी आरक्षण उन लोगों के लिए आरक्षित कर दिया गया है जो सरासर गलत है। पिछड़े वर्ग की जातियों के साथ यह खुला अन्याय है। इसलिए इस नई जनगणना में वे अन्य पिछड़े वर्ग की जातियों की जनगणना की मांग रख रहे हैं ताकि देश में जातियों की हकीकत साफ हो जाये और वे उसी आधार पर देश की सत्ता, सम्पदा और अन्य व्यवस्थाओं में अपनी उचित भागीदारी की मांग रख सकें। सरकार कोई जातिगत नया बखेड़ा ना खड़ा हो, इसलिए जातिगत जनगणना कराने से 'किन्तु-परन्तु' लगाकर भाग रही है।

जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी' का यह नारा कई दशकों से लगता आ रहा है। हम चाहते हैं कि सत्ता, सम्पदा, शासन-प्रशासन में सभी को जनसंख्या बल के आधार पर हिस्सेदारी मिले, जिससे कि देश में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और प्रशासनिक असमानता समाप्त हो सके और सब अपना जातिगत हिस्सा पाकर देश में सुख, शांति व वैभव के साथ रह सकें।

– डा. सुमनाक्षर

हिमायती
हिन्दी पाक्षिक पत्र
अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 200/- और आजीवन 1000/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–
सम्पादक : हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-9

पृष्ठ 1 का शेष....देश विदेश के दलित साहित्यकार और समाजसेवी 11-12 दिसम्बर को सम्मेलन को सुशोभित करेंगे

7. **डा. भोला प्रसाद यादव**
खोरहवा, डा.–पलनवा,
पूर्वी चम्पारण (बिहार)

डा. अम्बेडकर एक्सीलेंसी सर्विस नेशनल अवार्ड-2021

1. **श्री जितेन्द्र परडीआ**
चडाई पकं वाया उलून्डा
जिला–सुबरनपुर (उड़ीसा)
2. **श्रीमती मीनू दास, प्रिन्सिपल**
सर्बा भारतीय संगीत व संस्कृति
परिषद्, बाली गांव, लखीमपुर
(आसाम)
3. **डा. के.एम. कुमार स्वामी**
असिस्टेंट प्रोफेरसर
क्यासापुरा, चन्नापट्टाना,
जिला–राम नगरम (कर्नाटक)
4. **श्री जबर बीन अहमद**
वेट्टीओझिन जथोटम, केडाबुर,
कांझीक्कोडू (केरल)
5. **श्री ई.आर. सजीव**
कलयान्थीनी, एलाकोडु
ईडुकी (केरल)
6. **श्री निखीलेश बरूआ, सिंगर**
हेंगराबारी, डिसपुर, गुवाहाटी
(आसाम)
7. **श्रीमती उदय कुमारी**
छोट्टानिक्कार, पो.–कन्यान्नूर
एर्नाकुलम (केरल)
8. **श्रीमती ज्योत्सना फुकन**
तेनगहू गांव, जिला–गोलाघाट
(आसाम)

डा. अम्बेडकर सेवाश्री नेशनल अवार्ड-2021

1. **डा. मोहम्मद आफताब आलम**
आजाद नगर, अररिया
(बिहार)
2. **डा. श्वेता रानी**
पद्म डालम, कायस्थ टोला,
सहरसा (बिहार)
3. **डा. मो. सूजा जहीद अनवर**
खलीलाबाद, अररिया (बिहार)
4. **डा. कुमारी अंजना**
नार्थ इलेक्ट्रीक सीटी बोर्ड
मधेपुरा (बिहार)
5. **श्रीमती नीता साहेब राव भोसले**
फाउन्डर प्रेजीडेंट–गंगा तारा
फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)
6. **श्री खर्गेस्वर मिली, हेडमास्टर**
लेपेटा पारा एल.पी. स्कूल,
हलेम, जिला–बिस्वनाथ
(आसाम)

डा. अम्बेडकर साहित्यश्री नेशनल अवार्ड-2021

1. **डा. सीमा बोराह,**
फोक–डांसर (बिहू एक्सपर्ट)
सनराइज रेजीडेंसी, गुवाहाटी
(आसाम)

डा. अम्बेडकर कलाश्री नेशनल अवार्ड-2021

1. **श्री रेजीश के.आर.**
केनियामचेरिल, डा.–मुलवुकाडू
एर्नाकुलम (केरल)
2. **श्री प्रिया शिने**
पुल्लोलिल हाउस, पाला,
कोट्टायाम (केरल)

स्व. राकेश सोनी मेमोरियल-गुरू घासीदास नेशनल अवार्ड-2021

श्री सिरी राम अर्श, साहित्यकार
मोहाली, चंडीगढ़ (पंजाब)

महात्मा जोतीबा फुले नेशनल अवार्ड-2021

डा. गीतांजली जैसवाल
गौशाला चौक, मधेपुरा
(बिहार)

महर्षि वाल्मीकि नेशनल अवार्ड-2021

डा. सौमी स्यामचन्द
कैराली नगर, किज्हक्केरी,
कोट्टाराकारा, कोलम (केरल)

शहीद भगतसिंह नेशनल अवार्ड-2021

डा. आर.सी.पी. सिसोदिया
एक्स सी.एम.एच.ओ.,
आर.डी. गर्दी मेडिकल कालेज,
उज्जैन (म.प्र.)

भगवान बुद्धा नेशनल अवार्ड-2021

डा. जितेन्द्र 'मनु'
सिद्धार्थ नगर, वारंगल
(तेलंगाना)

वीर एकलव्य नेशनल अवार्ड-2021

श्री रजत कल्सान
एडवोकेट
हांसी, हिसार,
(हरियाणा)

वीरांगना सावित्रीबाई फुले नेशनल अवार्ड-2021

श्रीमती शकुन्तला देवी 'स्नेही'
पत्नी प्रो. (डा.) कालीचरन 'स्नेही'
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष,
लखनऊ विश्वविद्यालय (उ.प्र.)

वीरांगना त्रिलोचन सुमनाक्षर नेशनल अवार्ड-2021

श्रीमती रश्मि 'नीलम'
सुपुत्री आचार्य गुरुप्रसाद,
पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री,
भारतीय दलित साहित्य अकादमी,
दिल्ली

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 200/- और आजीवन 1000/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक : हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-9

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009